विश्वम्य व्याकर्णम्।।

विश्विद्यपदानि प्रमुज्यने । तानि उपस्मा इति क्रियाप्र के * अपसम्मा ३ छिमापदानं (स्थाती ३) अर्वमः उपमुज्यने । र. ज - प्रभाव , प्रहार व कीप : 2. परा — पराजयः, परामवः, परामवः उ. अप — अभपहार् : अपवर्श : अपया । 4. ल्यम - व्यर्भार्ड, व्यंहार्ड, समम् 5. अन् - कानुक्तिः, कानुगमनमं , कानुश्व 6. 19 - विरागः, विकारः, विमा े जारे - जारेक्ट्रेल , जिल्लांट - नार . 8. अव - कावसर , काव मरणमं काव जा 9. निर्- निर्झर्ड, निर्द्धन । पिर्शिम 10. यूर - युज्बमें हे, द्वामें , युजीनं हे । ।।। अगम - कामिपाम हे, कामिणानमें , कामिरतवनम् । ।२. अग - कालाम है, कालाप है, कालाप है। शहर कालाप है 13. नन - नियोश के नियह , नियानम 14 आहे - काबिक्ष के के काबिकार के काबिवास 15 पर - वरिनने , परिन्यभे , परिनयभे 16. 34 - अपन्या ३, अपदेश ३, अपयोग ३ 17. उ मुक्तिं, जुगमः, जुमशाः । अ प्रमा ३। १८. ज मिराः । अ अमिराः । अ अमिराः । अ विस्ताः 19. निसं - निस्स न्टेह, निस्सहाय, निस्तं छी युः 20. 3म — अभाव है, अभाव है, असी है, असी मार्य है। असी मार्य है। असी है, असी है। असी है। 22. अपी — अभिलार े, न्निमपानम, न्निमाय

一多一部。一